!!श्री हरिः!!

तर्कसंग्रहः - प्रत्यक्षपरिच्छेदः, भाग - १२

रसनाग्राह्यो गुणो रसः। स च मधुराम्ललवणकटु-कषायतिक्तभेदात् षड्विधः। पृथिवीजलवृत्तिः। तत्र पृथिव्यां षड्विधः। जले मधुर एव।

(भावार्थः) पदकृत्य -

रसत्वादिवारणाय गुण इति। रूपादावतिव्याप्तिवारणाय रसनेति। तत्रेति। पृथिवीजलयोरित्यर्थः। षड्विध इति - अत्र रस इत्यनुवर्तते।

भावार्थः -

रसना-इन्द्रिय से ग्रहण किया जानेवाला गुण रस है और वह मधुर (मीठा), अम्ल (खट्टा), लवण (नमकीन), कटु (कड़ुआ), कषाय (कसैला), तिक्त (तीता) के भेद से छः प्रकार का होता है। रस गुण पृथिवी और जल में रहता है। पृथिवी में पूर्वोक्त छः प्रकार का रस रहता है। जल में केवल मधुर रस रहता है।

गन्धं लक्षयति -

घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः। स च द्विविधः। सुरभिरसुरभिश्च पृथिवीमात्रवृत्तिः।

भा पदकृत्य -

घ्राणग्राह्य इति। गन्धत्वादावतिव्याप्तिवारणाय गुण इति। रूपादावतिव्याप्तिवारणाय घ्राणग्राह्य इति। पृथिवीति - पृथिवीसम्बन्धसत्त्वे गन्धप्रतीतिसत्त्वं पृथिवीसम्बन्धाभावे गन्धप्रतीत्यभावः इत्यन्वयव्यतिरेकाभ्यां पृथिवीगन्धस्यैव जले प्रतीतिर्बोध्या। एवं वायावपि। ननु देशान्तरस्थकस्तूरीकुसुमादिसम्बद्धपवनस्यैतद्देशे सत्त्वात्कुसुमादिसम्बन्धाभावाद्गन्धप्रतीत्यनुपपत्तिः।

न च वायवानीतत्र्यणुकादि-

सम्बन्धोऽस्त्येवेति वाच्यम्, कस्तूर्या न्यूनतापत्तेः, कुसुमस्य च सच्छिद्रत्वापत्तेरिति चेन्न, भोक्तृदृष्टविशेषेण पूर्ववत् द्व्युणुकान्तरोत्पत्तेः, कर्पूरादौ तु तदभावान्न तथात्वमिति।

भावार्थः—

घ्राण इन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण गन्ध है। वह दो प्रकार का होता है - सुरभि (सुगन्ध) और असुरभि (दुर्गन्ध) गन्ध-गुण केवल पृथिवी में रहता है।

पृथिवी का सम्बन्ध रहने पर गन्ध की प्रतीति होती है, पृथिवीसम्बन्ध का अभाव होने पर गन्ध की प्रतीति नहीं होती है ऐसा जानना चाहिए। यद्यपि - देशान्तर में स्थित कस्तूरी या कुसुम से सम्बद्ध वायु के कारण होनेवाली गन्धप्रतीति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि कुसुमादि का सम्बन्ध गन्धप्रतीति स्थान में नहीं है। यदि कहे कि वायुद्वारा लाये कुसुम के द्व्यणुक का सम्बन्ध वहाँ भी है, तो ऐसा नहीं कह सकते, क्योंकि द्व्युणुक के निकल जाने पर कस्तूरी में न्यूनता आ जानी चाहिये तथा कुसुम में छिद्र हो जाना चाहिए- ऐसी आशङ्का हो सकती है, तथापि भोक्ता के अदृष्टविशेष से कस्तूरी आदि में तो द्व्यणुकान्तर की उत्पत्ति हो जाने से न्यूनता या सच्छिद्रता नहीं आने पाती है। कर्पूर आदि में तो वैसे अदृष्ट का अभाव होने से द्व्युणुकान्तर की उत्पत्ति नहीं होती है और उसमें न्यूनता आ जाती है।

डॉ० अवधेश कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक (व्याकरण)
के वि सं म वि. रहीमपुर,
खगड़िया।